1. कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

कथावाचक और हरिहर काका के बीच आत्मीय, स्नेहपूर्ण रिश्ता था। हरिहर काका लेखक के पड़ोसी थे और उन्होंने लेखक को बचपन से बहुत प्यार व दुलार दिया। अपनी संतान न होने के कारण, काका ने कथावाचक को पुत्रवत स्नेह दिया, साथ ही उसे कंधे पर बैठाकर पूरे गाँव में घुमाते। बड़े होने पर उनकी मित्रता और गहरा गई, वे व्यक्तिगत बातें आपस में साझा करते। जब काका बूढ़े और असहाय हो गए, तब भी कथावाचक ने उनका साथ नहीं छोड़ा, उनकी समस्याओं को समझने और समर्थन देने का पूरा प्रयास किया। दोनों का संबंध खून का नहीं था, लेकिन दिल से दिल का था—विश्वास, अपनापन और सहारे का रिश्ता।

2. हरिहर काका को मंहत और भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

हरिहर काका के पास ज़मीन थी और उनकी कोई संतान नहीं थी, इसी वजह से महंत और उनके भाई दोनों उनकी ज़मीन प्राप्त करना चाहते थे। भाई प्यार का दिखावा कर रहे थे ताकि ज़मीन उनके नाम हो सके, वही महंत धर्म के नाम पर ज़मीन लेना चाहता था। जब दोनों पक्षों की असलियत सामने आती है, तब काका को लगता है कि उनका लगाव सिर्फ़ ज़मीन के लिए है, प्रेम या संबंध के लिए नहीं। महंत द्वारा अपहरण, मारपीट और जबरन अंगूठा लगवाना तथा भाइयों का स्वार्थपूर्ण व्यवहार काका को दोनों के प्रति एक जैसा विचार करने को मजबूर कर देता है।

3. ठाकुरबाड़ी के प्रति गाँववालों के मन में श्रद्धा उनकी किस मनोवृत्ति को दर्शाती है?

इससे गाँव के लोगों की अंधश्रद्धा और धर्मभीरुता का पता चलता है। वे मंदिर और महंत जैसे लोगों पर आँख मूंदकर विश्वास करते हैं, चाहे वे अंदर से स्वार्थी हों। प्रायः, गाँव वाले धार्मिक संस्थाओं को निष्कलंक मानते हैं, और विरोध करने से डरते हैं; इसीलिए ठाकुरबाड़ी को पवित्र मानकर सबकुछ स्वीकार कर लेते हैं।

4. अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका की दुनियादारी की समझ—कैसे?

हरिहर काका पढ़े-लिखे नहीं थे, फिर भी बहुत समझदार थे। वे समझते थे कि गाँव में कई लोगों ने अपने रिश्तेदारों के नाम ज़मीन कर दी और बाद में दुखी रहे। काका ने अनुभव के आधार पर तय किया कि न तो भाई और न ही महंत के बहकावे में आएँगे। वे अपने स्वार्थ

और लोगों के व्यवहार में फर्क कर सकते थे, इसलिए वे कोई भी कदम सोच-समझकर उठाते थे।

5. हरिहर काका को जबरन उठाने वाले कौन थे, और कैसा व्यवहार किया?
महंत के चेले और साधु-संतों की टोली ने मिलकर हरिहर काका को जबरन उठा लिया। उन्होंने काका के हाथ-पाँव बाँध दिए, मुँह में कपड़ा ठूँसकर, जबरन अंगूठे का निशान लिया, और उन्हें कमरे में बंद कर दिया। पुलिस आते ही महंत और उसके आदमी गुप्त दरवाज़े से भाग गए, काका बेसहारा रह गए।

6. गाँव वालों की क्या राय—कारण सहित:
गाँव दो पक्षों में बँट गया—कुछ मंदिर, कुछ परिवार के पक्ष में थे। धार्मिकता, लालच, और स्वार्थ उनकी राय को प्रभावित कर रहे थे। अधिकांश लोग या तो स्वहित या अंधविश्वास से ग्रस्त थे—हरिहर काका की असली भलाई के लिए कोई सोच नहीं रहा था।

7. लेखक का कथन: "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं..." का आशय क्या है?
जब इंसान सच्चाई से अनजान रहता है, उसे मृत्यु का भय होता है; जैसे काका—परंतु जब वे धोखे, स्वार्थ और असलियत समझ जाते हैं तो वे तिल-तिल कर जीने के बजाय एक बार मौत को गले लगाने के लिए तैयार हो जाते हैं। ज्ञान उन्हें निर्भीक बना देता है।

8. समाज में रिश्तों की अहमियत—विचार:
आज रिश्तों की अहमियत कम होती जा रही है, अधिकांश रिश्ते स्वार्थ, संपत्ति या धन के लिए निभाए जा रहे हैं। अमीर रिश्तेदारों को महत्व मिलता है, गरीबों को नज़रअंदाज़ किया जाता है; पैसे के लिए भाई-भाई के बीच खून, हत्या, अपहरण होना आम-सी बात हो गई है।

9. हरिहर काका जैसी स्थिति में आप कैसे मदद करेंगे?
अगर कोई बुजुर्ग ऐसे हालात में दिखे तो मैं उनकी भावनाओं को समझूंगा, उनसे बात करूंगा, भावनात्मक समर्थन दूँगा, प्रशासन, ग्राम सभा या सामाजिक संस्था की मदद

लेकर उनकी देखभाल, संपत्ति की रक्षा और रिश्तेदारों में सामंजस्य का प्रयास करूंगा, ताकि वो सम्मान के साथ जीवन बिता सकें।

10. मीडिया की पहुँच होती तो क्या स्थिति होती?

अगर मीडिया गाँव में पहुँची होती, तो महंत और काका के भाइयों का लालच और अन्याय सबके सामने उजागर होता। मीडिया पूरे घटनाक्रम का प्रसारण करती, प्रशासन और कानून का ध्यान आकर्षित होता, और हरिहर काका को न्याय तथा सुरक्षा प्राप्त होती। गाँव व समाज में भी यह संदेश जाता कि बुजुर्गों के साथ अन्याय अब छिप नहीं सकता।